शोध मंथन, 2018 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 5.463 (SJIF)
UGC Approved Journal No. 40908

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महामात्य चाणक्य की नीति एवं शैक्षिक विचारों की उपादेयता

रजनी शर्मा*, डॉ0 अमर जीत सिंह 'परिहार' **

** रिसर्च स्कॉलर (एज्युकेशन)मेवाड़ यूनिवर्सिटी, चित्तौड़गढ़*

*** प्राचार्य संकल्प इन्सिट्यूट ऑफ एज्युकेशन,*

सारांश

महामात्य चाणक्य एक ऐसी महान विभूति थे। जिन्होंने अपनी विद्वता और क्षमताओं के बल पर भारतीय इतिहास की धारा को बदल दिया। मौर्य साम्राज्य के संस्थापक चाणक्य कुशल राजनीतिज्ञ, चतुर कूटनीतिज्ञ, प्रकाण्ड अर्थशास्त्री के रूप में भी विश्वविख्यात हुए। इतनी सदियाँ गुजरने के बाद आज भी यदि चाणक्य के द्वारा बताये गये शैक्षिक विचार और नीतियाँ प्रासंगिक हैं तो मात्र इसलिए क्योंकि उन्होंने अपने गहन अध्ययन, चिन्तन और जीवनानुभवों से अर्जित अमूल्य ज्ञान को, पूरी तरह निःस्वार्थ होकर मानवीय कल्याण के उद्देश्य से अभिव्यक्त किया। महामात्य चाणक्य कहते हैं हमें जो भी कार्य करना है उसे पूरी शक्ति से करना चाहिए। कार्य जितना छोटा या बड़ा हो हमें पूरी शक्ति लगाकर करना चाहिए। तभी हमारी कामयाबी पक्की हो सकती है। जिस प्रकार कोई शेर अपने शिकार पर पूरी शक्ति से झपटता है और शिकार को भागने का मौका नहीं देता, इसी गुण के कारण वह कभी असफल नहीं होता है। हमें सिंह की भाँति ही अपने लक्ष्य की ओर झपटना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए। यही सफलता प्राप्त करने के अचूक उपाय महामात्य चाणक्य ने अपनी नीति में दिये हैं। महामात्य चाणक्य ने अपनी नीतियों से भारत की रक्षा की। महामात्य चाणक्य ने अपने प्रयासों और नीतियों के बल पर एक सामान्य बालक चन्द्रगुप्त को भारत का सम्राट बनाया। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महामात्य चाणक्य की नीतियाँ और शैक्षिक विचार हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं। जो भी व्यक्ति इन नीतियों का पालन करता है, उसे जीवन में सभी सुख–सुविधाऐं और कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं।

मूल शब्द : *महामात्य चाणक्य, नीतियाँ, चतुर कूटनीतिज्ञ, कुशल राजनीतिज्ञ, शैक्षिक विचार।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

रजनी शर्मा*, डॉ0 अमर जीत सिंह 'परिहार'**

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महामात्य चाणक्य की नीति एवं शैक्षिक विचारों की उपादेयता

शोध मंथन, जून 2018, पेज सं0 61–67

Article No. 10
http://anubooks.com
?page_id=581

रजनी शर्मा, डॉ0 अमर जीत सिंह 'परिहार'***

परिचय

चाणक्य का जन्म ईसा पूर्व तीसरी या चौथी शताब्दी में माना जाता है। वे एक महान कूटनीतिज्ञ एवं राजनीतिज्ञ थे। इन्होंने मौर्य साम्राज्य की स्थापना और चन्द्रगुप्त को सम्राट बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके पिता का नाम चणक था, इसी कारण उन्हें 'चाणक्य' कहा जाता है। वैसे उनका वास्तविक नाम 'विष्णु गुप्त' था। कुटिल कुल में पैदा होने के कारण वे 'कौटिल्य' भी कहलाये। चाणक्य के जीवन से जुड़ी हुई कई कहानियाँ प्रचलित हैं। एक बार चाणक्य कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुशा नाम की कँटीली झाड़ी पर उनका पैर पड़ गया, जिससे उनके पैर में घाव हो गया। चाणक्य को कुशा पर बहुत क्रोध आया। उन्होंने वहीं संकल्प कर लिया कि जब तक कुशा को समूल नष्ट नहीं कर दूँगा तक तक चैन से नहीं बैठूँगा। वे उसी समय मट्ठा और कुदाली लेकर पहुँचे और कुशों को उखाड़–उखाड़ कर उनकी जड़ों में मट्ठा डालने लगे ताकि कुशा पुनः न उग पाये। इस कहानी से पता चलता है कि चाणक्य कितने कठोर, दृढ़संकल्प वाले और लगनशील व्यक्ति थे। जब वे किसी काम को करने का निश्चय कर लेते थे तब उसे पूरा किये बिना चैन से नहीं बैठते थे। महामात्य चाणक्य बड़े ही स्वाभिमानी एवं क्रोधी स्वभाव वाले व्यक्ति थे। विश्व स्तर पर महामात्य चाणक्य एक प्रकाण्ड विद्वान तथा एक गम्भीर चिन्तक के रूप में विख्यात हैं।

मौर्य साम्राज्य की नींव डालने में भूमिका

महामात्य चाणक्य एक ऐसी महान विभूति थे, जिन्होंने अपनी विद्वता और क्षमताओं के बल पर भारतीय इतिहास की धारा को बदल दिया। विष्णु पुराण में इस घटना की चर्चा इस तरह की गई है– 'महापदम नन्द नाम का एक राजा था। उसके नौ पुत्रों ने सौ वर्षों तक राज्य किया। उनकी मृत्यु के बाद मौर्यों ने पृथ्वी पर राज किया और कौटिल्य ने स्वयं प्रथम चन्द्रगुप्त का राज्याभिषेक किया। चन्द्रगुप्त का पुत्र बिन्दुसार हुआ और बिन्दुसार का पुत्र अशोकवर्धन हुआ।' अर्थात् महामात्य चाणक्य ने ही मौर्य साम्राज्य की नींव डाली है।

महान संगठनकर्त्ता, नीतिकार और देशप्रेमी के रूप में महामात्य

चाणक्य का जीवन बड़ा ही संघर्षपूर्ण रहा। गरीबी और अभावों में वह भले ही रहे पर जिस तरह अपने समय का सामना किया तथा मनुष्य को उसकी सही पहचान दी। बंटे हुए राज्यों को एकसूत्रा में पिरोने और राष्ट्र की शक्ति को संगठित करने में अपनी जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी वह अद्वितीय है। नन्द साम्राज्य को समाप्त करके चन्द्रगुप्त जैसे व्यक्ति को न केवल राजा बनाया बल्कि अपनी शक्ति, कौशल व बुद्धि के बल पर एकछत्रा राज्य भी संचालित किया। यह महामात्य चाणक्य के संगठनकर्त्ता के रूप को हमारे सामने एक आदर्श रूप में सम्मुख रखता है। महामात्य चाणक्य कुशल राजनीतिज्ञ, चतुर कूटनीतिज्ञ तथा देशप्रेमी के रूप में विख्यात हैं। उनकी नीतियाँ आज भी विख्यात हैं। उन्होंने इस संसार में मनुष्य को सुखी रहने के लिए बहुत–सी नीतियों की रचनाएँ की थीं। उनकी नीतियाँ आधुनिक युग में मनुष्य ग्रहण करता है। महामात्य चाणक्य के अनुसार जो भी मनुष्य उनके नीतिसूत्रों को जो अपने जीवन में पकड़कर चलेगा, जीवन में प्रगति करेगा। चाणक्य नीति के प्रस्तुत अंश–

1. जिस प्रकार सभी पर्वतों पर मणि नहीं मिलती, सभी हाथियों के मस्तक में मोती उत्पन्न नहीं होता, सभी वनों में चंदन का वृक्ष नहीं होता, उसी प्रकार सज्जन पुरुष सभी जगहों पर नहीं मिलते हैं।

2. झूठ बोलना, उतावलापन दिखाना, दुस्साहस करना, छल–कपट करना, मूर्खतापूर्ण कार्य करना, लोभ करना, अपवित्रता और निर्दयता– ये सभी स्त्रियों के स्वाभाविक दोष हैं।

3. भोजन के लिए अच्छे पदार्थों का उपलब्ध होना, उन्हें पचाने की शक्ति का होना, सुन्दर स्त्री के साथ संसर्ग के लिए कामशक्ति का होना, प्रचुर धन के साथ–साथ धन देने की इच्छा होना। ये सभी सुख मनुष्य को बहुत कठिनता से प्राप्त होते हैं।

4. चाणक्य कहते हैं कि जो व्यक्ति अच्छा मित्र नहीं है उस पर तो विश्वास कभी भी नहीं करना चाहिए, परन्तु इसके साथ ही अच्छे मित्र के संबंद्ध में भी पूरा विश्वास नहीं करना चाहिए, क्योंकि यदि वह नाराज हो गया तो आपके सारे भेद खोल सकता है। अतः सावधानी अत्यन्त आवश्यक है।

5. चाणक्य कहते हैं कि बचपन में संतान को जैसी शिक्षा दी जाती है, उनका विकास उसी प्रकार होता है। इसलिए माता–पिता का कर्त्तव्य है कि वे उन्हें ऐसे मार्ग पर चलाएँ, जिससे उनमें उत्तम चरित्र का विकास हो क्योंकि गुणी व्यक्तियों से ही कुल की शोभा बढ़ती है।

6. वे माता–पिता अपने बच्चों के लिए शत्रु के समान हैं, जिन्होंने बच्चों की अच्छी शिक्षा नहीं दी क्योंकि अनपढ़ बालक का विद्वानों ने समूह में उसी प्रकार अपमान होता है जैसे हंसों के झुंड में बगुले की स्थिति होती है। शिक्षा विहीन मनुष्य बिना पूंछ के जानवर जैसा होता है, इसलिए माता–पिता का कर्त्तव्य है कि वे बच्चों को ऐसी शिक्षा दें, जिससे वे समाज को सुशोभित करें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि चाणक्य एक सम्पूर्ण नीतिकार के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। देशप्रेमी के रूप में चाणक्य की भूमिका प्रमुख है। महामात्य चाणक्य का चरित्रा अत्यन्त उज्ज्वल, स्पष्ट, आदर्श एवम् अनुकरणीय है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चाणक्य के शैक्षिक विचारों की उपादेयता

ज्ञान को प्राप्त करने के लिए गुरु की अनिवार्य आवश्यकता है। शिष्य को चाहिए कि वह समित्पाणि होकर गुरु की सेवा में उपस्थित हो। भारतीय शिक्षा–व्यवस्था में गुरु और शिष्य का सम्बन्ध अति पवित्र माना गया है। यह गौरवपूर्ण और मधुर है। महामात्य शिष्यों के प्रति स्नेह रखते थे और उनको सब प्रकार से योग्य बनाने का प्रयत्न करते थे। आचार्य की सेवा करना और उनके आदेशों का पालन करना शिष्य भी अपना कर्त्तव्य समझते थे। शिक्षण के क्षेत्र में महामात्य को पितातुल्य समझा जाता है। शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्त्वपूर्ण पक्ष है, इसके द्वारा मानव अपना आर्थिक विकास करता है एवं जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है। अपने आचार–विचार तथा रहन–सहन में परिवर्तन एवं परिमार्जन करता है। शिक्षा के द्वारा ही संसार की आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति होती है। प्रभावपूर्ण शिक्षा योग्य शिक्षकों के द्वारा हो पाती है। शिक्षकों को ज्ञान जितना ठोस, बहुविध तथा श्रेष्ठ होगा शिक्षक उतनी ही श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं की स्थापना की गयी है। शिक्षक–प्रशिक्षण में शिक्षण–विधि, शिक्षक व्यवहार कौशल,

पाठ्यक्रम आदि पर ध्यान दिया जाता है। शिक्षा के अन्तर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम का प्रभाव व्यक्ति पर अवश्य पड़ता है। पाठ्यक्रम में देशकालीन परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन भी होता रहता है। फिर भी समाज का कल्याण एवं सच्चरित्रता, नैतिकता, आध्यात्मिकता आदि भी उन्हीं आदर्शों में प्रमुख स्थान रखती है। उच्च तथा आदर्शपूर्ण शिक्षा हमारे भारतीय प्राचीन ग्रन्थों में सुरक्षित है।

मानव जीवन में चिन्तन, मनन एवं विवेक का महत्त्व है। यह सब मानव शिक्षित होने पर ही सम्भव है। प्रकृति ने मानव जीवन का निर्माण इस ढंग से किया है कि वह बहुत कुछ सीख सके। इस प्रकार सीखना मानव का स्वभाव है तथा सीखने की प्रक्रिया जीवन भर चलती रहती है। अतः इस प्रकार मानव का यह अधिकार हो जाता है कि वह समुचित शिक्षा प्राप्त करे। भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री मौ. अब्दुल कलाम आजाद ने कहा था– 'प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है, जिससे वह अपनी योग्यताओं के विकास तथा पूर्ण जीवन यापन के लिए सामर्थ होगा।'

शिक्षा का जीवन में अधिक महत्त्व है। शिक्षा के प्रकाश से मनुष्य के सभी पाप कर्म क्षीण हो सकते है तथा वह नैतिक मूल्यों का विकास कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा का महत्त्व मनुष्य के निर्माण में स्वतः ही प्रकट हो जाता है। आधुनिक काल की शिक्षा में हमें दो विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। पहली शिक्षा सेवा कार्य के लिए आवश्यक समझी गयी, दूसरी प्रमुखता राष्ट्रीय एवं जनतांत्रिक चेतना आज की शिक्षा का ही परिणाम है। आधुनिक काल के लोगों का जीवन–दर्शन ही परिवर्तित हो गया है। सन् 1947 के बाद जनतन्त्र की स्थापना से नवीन चेतना जागृत हुई, जो 'शिक्षा जन्म सिद्ध अधिकार है', जैसे कथनों में मिलती है। इस भावना से अनुशासन की समस्या भी काफी बढ़ गयी है। जनता की पुकार शिक्षा में समानता एवं स्वतन्त्रता के लिए काफी जोर पकड़ रही है।

आज हमारा आदर्शवादी दृष्टिकोण भी परिवर्तित हो गया है। विज्ञान के अध्ययन–अध्यापन में रुचि बढ़ रही है। वर्तमान कालीन शिक्षा में भौतिकवादी दृष्टिकोण अधिक आ गया है। आज समाज में अनैतिक एवं अहितकर ढंग से व्यवहार करते हैं, जिसका परिणाम बड़ा भयावह हो रहा है और सामाजिक विघटन बड़ी शीघ्रता से होता जा रहा है। ऐसी स्थिति के मूल में हमारी शिक्षा की योजना उसके उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं अध्यापक शिक्षण तथा शिक्षण विधियों को निर्धारित करने में प्रयुक्त होता है। आज केवल राष्ट्र की ही नहीं अपितु सभी राष्ट्रों को मिलाकर अन्तर्राष्ट्रीयवाद की भावना होनी चाहिए, जिसका आधार आधुनिक मानव सम्बन्ध से है। जब से मानव सभ्यता का सूर्य उदय हुआ है, तभी से भारत अपनी शिक्षा तथा दर्शन के लिए प्रसिद्ध रहा है। ये सब भारतीय शिक्षा की विशेषताओं का ही परिणाम है।

समाज की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा का स्वरूप परिवर्तित होता गया। शिक्षा आदर्शवादी, धार्मिक, नैतिक होते हुए भी व्यवहारवादी दिखाई देती है। शिक्षा समाज को बदलने की पूर्ण सामर्थ्य रखती है। किसी भी समाज अथवा देश की शासकीय प्रणाली चाहे साम्यवादी, समाजवादी या प्रजातांत्रिक हो, सर्वप्रथम अपने प्रभाव को अमिट बनाने के लिए शिक्षा के स्वरूप पर ही ध्यान देना होगा। प्राचीनकाल में यदि मानव का जीवन असंस्कृत या पाशविक रहा तो उस समय की शिक्षा का स्वरूप भी वैसा ही रहा। संसार के सभी दार्शनिकों, राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों, समाज–सुधारकों एवं शिक्षा–शास्त्रियों ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि शिक्षा के द्वारा

राष्ट्रीय एकता का विकास सम्भव है। महामात्य चाणक्य जैसे दूरदर्शी राजनीतिज्ञ ने भी शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण पर बल दिया है।

आज की शिक्षा के सम्बन्ध में सभी की ये धारणा है कि शिक्षा सार्थक नहीं है, इसमें परिवर्तन की आवश्यकता है परन्तु इस सम्बन्ध में मूल प्रश्न उठते हैं कि शिक्षा में क्या और कैसे परिवर्तन किया जाए? वास्तव में शिक्षा के सम्बन्ध में ये बड़े महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं। शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के विकास में योगदान दे सके और ऐसे नागरिक तैयार करे, जो समाज में स्थान ले सकें।

राष्ट्रीय एकता का शिक्षा में गहरा सम्बन्ध है। शिक्षा ही केवल वह साधन है, जिसके द्वारा राष्ट्रीय एकता देश में स्थापित की जा सकती है। अध्यापक का इस दिशा में सर्वोत्तम योगदान होता है। सम्पूर्ण देश के प्रति अपनत्व की भावना का विकास विद्यार्थियों में होना चाहिए, जो अध्यापक ही कर सकता है। महामात्य चाणक्य भी एक अध्यापक थे। महामात्य ने नन्द वंश को समाप्त कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। राष्ट्रीय एकीकरण की स्थापना के लिए शिक्षा प्रणाली का विशेष महत्त्व है। इसके लिए हमारी शिक्षा प्रणाली हमारे देश की राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुकूल हो। डॉ. सम्पूर्णानन्द कमेटी ने राष्ट्रीय एकता की समस्या पर विचार किया तथा सुझाव दिया कि पाठ्यक्रम को एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर इसका पुनर्गठन किया जाए। समिति ने वर्तमान पाठ्य पुस्तकों को बदलने की सिफारिश भी की। इनमें ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर या बढ़ा–चढ़ा कर नहीं लिखा जाए क्योंकि राष्ट्रीय एकता के लिए पुस्तकों का बहुत महत्त्व है।

आज का मानव भारतीय संस्कृति की उन भावनाओं से विमुख हो गया है, जो आध्यात्मिक भावनाओं, विश्व कल्याण की उत्कृष्टता और ईश्वरीय शक्ति के प्रति आस्था रखती है। भारतीय संस्कृति इस बात की शिक्षा देती है कि भौतिक सुखों का उपयोग करते हुए भी ईश्वरीय शक्ति को नहीं भूलना चाहिए। स्वार्थ की अपेक्षा विश्व कल्याण अधिक श्रेयस्कर है। शारीरिक विकास के साथ–साथ मनुष्य का आध्यात्मिक विकास भी होना जरूरी है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा ने विश्व में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान का प्रसार किया था। यहाँ के विश्वविद्यालय विश्व में प्रसिद्ध थे। विदेशी छात्र दूर–दूर से यहाँ आकर शिक्षा प्राप्त करके गौरव का अनुभव करते थे। यहाँ के आचार्यों ने दूर–दूर देशों में जाकर ज्ञान–विज्ञान का प्रसार किया था। परन्तु आज अवस्था उल्टी हो रही है। शताब्दियों की पराधीनता ने इस देश के गौरव को नष्ट कर दिया था। आज भारतीय विद्यार्थी विदेशी ज्ञान की अपेक्षा करता है। विदेशी शिक्षा के बिना भारतीय अपने को सुशिक्षित नहीं मानता। महामात्य चाणक्य की शिक्षा के द्वारा इस पर मुखोपेक्षित को दूर किया जा सकता है।

भारत की वर्तमान स्वार्थमूलक तथा अज्ञान मूलक राजनीतिक दुर्दशा में एक मात्रा चाणक्य की शिक्षा ही भारत का पथ–प्रदर्शक बनने की क्षमता रखती है। महामात्य चाणक्य की शिक्षा ही भारतवासियों को राजनीतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग दिखा सकती है। माँ भारती की वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थिति आज भारतीय राज्य हो जाने के साठ वर्षों से अधिक के बाद भी उसी कपट जाल में फँसी हुई है, जिसमें इसे ब्रिटिश लोग अपने वैदेशिक स्वार्थ से फाँस गये थे। उसके कारण आज के भारतवासी के सिर पर राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रहित तथा मनु के आदर्शों

की उपेक्षा कराने वाली स्वार्थ चिन्ता आरूढ़ हो गई है। देश में लोगों को अपने पीछे चलाने वाले प्रभुता लोभी नेताओं के दूषित आदर्श को राष्ट्रीय शिक्षा का ध्येय बना दिया है, इससे देश में सांस्कृतिक ध्वंस मच गया है। आज देश में महामात्य चाणक्य की राष्ट्रीय शिक्षानीति के तहत सामरिक नीति की आवश्यकता है। महामात्य चाणक्य की नीति के अनुसार शत्रु पर देश की सीमा के बाहर ही आक्रमण करना चाहिए। यदि आचार्य की नीति को प्रयोग में लाया जाता तब आज कारगिल जैसी स्थिति पैदा ही नहीं होती।

आज भारत देश की मानसिक स्थिति हमारे राष्ट्र में राष्ट्रीयता की असामाजिकता तथा नीति भ्रष्टता की उदीयमान स्थिति है। देश को इस स्थिति से शीघ्र उबारने की आवश्यकता है। प्रभुता लोभी नेताओं की मदिरा ने भारत को नशे में चूर कर दिया है। देश से इस प्रभुता लोभी मदिरा का बहिष्कार करने का एकमात्र उपाय उसके पाठ्यक्रम में महामात्य चाणक्य की राजनीतिक चिन्तन–धारा को समाविष्ट करना ही है। यदि भारत माता को सत्यानुगाामी स्वतन्त्र विचारक, स्वतन्त्रता–प्रेमी वीरों की जननी होने का गौरव देना हो तो उसका एकमात्र उपाय देश को राष्ट्र सुधारक शिरोमणि, राजनीतिक धन्वन्तरी महामात्य चाणक्य की विचारधारा से आप्लावित कर डालना ही है। यदि आज के भारतीय युवकों को भारतीय राजधर्म के प्रकाण्ड पण्डित चाणक्य की सुपरिमार्जित विचारधारा से सुपरिचित न कराया गया तो भारत भौतिकलक्ष्य दास का पुरुष उत्पन्न करने वाला बना रहेगा।

महामात्य चाणक्य के अनुसार भारत की राजनीति, नैतिकता, मनुष्यता और आध्यात्मिकता में कोई भेद नहीं है। ये सब अभिन्न अंग है। कर्त्तव्य पालन में जिस दृढ़ता की आवश्यकता है, वही अध्यात्म है। दृढ़ता अध्यात्म की ही देन है। दृढ़ता के बिना राष्ट्र नहीं रह सकता। मानवीय यथार्थ ज्ञान अध्यात्म नैतिकता, मनुष्यता तथा मुक्ति आदि का यही स्वरूप है कि मानव आठो पहर भोग भोजनान्वेषी होकर भटकते फिरने वाले पशु पक्षियों के समान न होकर और केवल अपने व्यक्तिगत क्षुद्र स्वार्थों में न पड़ा रहे, अपितु मानवोचित मानसिक स्थिति में रहने के लिए, समाज कल्याण को ही अपना वास्तविक कल्याण समझे।

आजकल अपने विषय में घोर अँधेरे में रहते हुए भी संसार के विषय में परिचय प्राप्त कर लेना ज्ञान की परिभाषा बन गई है परन्तु निश्चय ही यह ज्ञान नहीं है, किन्तु अपने आपको जान लेना ही ज्ञान है। यह वह ज्ञान है, जिसका मानव के चरित्र निर्माण पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

महामात्य चाणक्य का साहित्य समाज में शान्ति और न्याय की रक्षा सिखाने वाला शिक्षा को सुप्रतिष्ठित करने वाला ज्ञान भण्डार है। चाणक्य ने राजा की शिक्षा व्यवस्था की है परन्तु भारत में कौटिल्य की शिक्षा व्यवस्था की उपेक्षा करके स्वदेशी विदेशी दोनों प्रकार के शत्रुओं को आक्रमण करने का निमन्त्रण देकर अपने को शत्रुओं का निरुपाय आखेट बनाने वाली आसुरी शिक्षा को अपनाया है। आज भारतीय शिक्षा में सुधार तभी सम्भव है, जब शिक्षा में चाणक्य की राजनीति का भारतीय दृष्टिकोण अपनाया जाए तथा अध्यात्म तथा राजनीति की एकता को लेकर चलने वाली भारत की आर्य राजनीति के प्रतीक महामात्य चाणक्य की शिक्षा नीति को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। महामात्य चाहते थे कि मानव–सन्तान को जीवन के नैतिक आधारों से सुपरिचित कराकर उसे ज्ञानलोक का दर्शन कराना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

उपसंहार

'आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महामात्य चाणक्य की नीति एवं शैक्षिक विचारों की उपादेयता' जैसे उपयोगी एवं जन–साधारण से जुड़े व्यक्तित्व पर इस शोध पत्र का समापन करते हुए मैं 'उपसंहार' के रूप में एक ही बात निश्चयपूर्वक कहूँगी कि महामात्य चाणक्य जैसे महान व्यक्तित्व सदियों में जन्म लेते हैं। भारत भूमि को यह श्रेय है कि यहाँ अनेक महान विभूतियों के साथ 'चाणक्य' जैसे असाधारण प्रतिभाशाली, मनोवैज्ञानिक, तेजस्वी, तपस्वी, सूक्ष्मदर्शी और ज्ञानावतार पंडित ने यहाँ जन्म लेकर न केवल इसे गौरवान्वित किया अपितु उनकी लेखनी में ओज, तेज, दृढ़ता, साहस, आत्मविश्वास तथा राष्ट्र सुधार की गहरी लगन थी। उनका अपना कोई व्यक्तिगत जीवन नहीं था, वह व्यक्ति समाज और देश के लिये ऐसे अनमोल व्यक्तित्व थे, जो समाज सुधार के लिये सर्वात्मना समर्पित हो चुके थे। भारत ही नहीं पाश्चात्य देशों के मूर्धन्य विद्वानों ने भी चाणक्य के ज्ञान और नीतियों की खुले ह्रदय से स्वीकार कर अपने देशों के राजनैतिक साहित्य में श्रीवृद्धि की है।

कौटिल गोत्रिय महाऋषि चणक के पुत्र विष्णुगुप्त जो 'चाणक्य' के नाम से विख्यात हुए, सम्राट चन्द्रगुप्त के तक्षशिला विश्वविद्यालय से आचार्य थे। उनमें देश सेवा की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। अतः अनुभवों के आधार पर उन्होंने भारत की सत्ता को एक राष्ट्र के रूप में सुरक्षित करने का जो अदम्य साहस दिखाया, वह भारतीय इतिहास में पहला ऐसा कदम है, जिस पर हर भारतीय को गर्व रहेगा। महामात्य चाणक्य ने समय–समय पर साम्राज्य को स्थायित्व देने के लिये चन्द्रगुप्त को आदर्श राज–चरित्र निर्माण के जो–जो पाठ सिखाये, उन्हें उन्होंने उसके तथा भारत के भावी राजाओं के स्वाध्याय के लिये, उनको राजनीति का ज्ञान प्रदान करने के लिये अर्थशास्त्र जैसा महान ग्रंथ प्रदान किया। उन्होंने 'लघु चाणक्य', 'वृद्ध चाणक्य', 'चाणक्य नीति' और 'चाणक्य सूत्रा' जैसे अनेक महान ग्रंथों की रचना की। 'चाणक्य नीति' महामात्य चाणक्य का न केवल अनुपम ग्रंथ है– इससे चाणक्य की शिक्षा, दर्शन, साहित्य, राजनीति, जीवन–जगत सम्बन्धी अनुभूतियाँ आदि के साथ मनुष्य के जीवन, कर्म और धर्म सम्बन्धी अवधारणाएँ भी सामने आती हैं। उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र, हर विषय पर अपने खुले विचारों से आत्मा–परमात्मा और ईश्वर तक की सत्ता को स्वीकारा तथा अपने अनुभवों को नीतियों में ढालकर शिक्षा–दर्शन में इनकी उपादेयता को रेखांकित किया। ऐसे महान दार्शनिक, चिन्तक व राष्ट्रभक्त को हमारा प्रणाम।

संदर्भ

1. अश्विनी शर्मा : *चाणक्य की शिक्षा और सलाह*
2. जयशंकर प्रसाद : *चन्द्रगुप्त*, आर. लाल. बुक डिपो
3. गणपति शास्त्री : *कौटिल्य अर्थशास्त्र*
4. डॉ. मधुसूदन त्रिपाठी : *कौटिल्य का आर्थिक चिन्तन*
5. सी.एम.श्रीवास्तव : *सम्पूर्ण चाणक्य नीति*, तुलसी साहित्य पब्लिकेशन्स
6. सत्यकेतु विद्यालंकार : *मौर्य समाज का इतिहास*
7. राधा कुमुद मुखर्जी : *चन्द्रगुप्त मौर्य और उनका समय,* मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन्स